|  |
| --- |
| 22. Februar  |
| **Fest Kathedra Petri**  |
| Lesung: 1 Petr 5,1-4; Evangelium: Mt 16,13-19 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 478, 1+3 | Ein Haus voll Glorie |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus, du rufst die Menschen |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 23,1-6 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 37, 1 | Der Herr ist mein Hirt |
|  | oder Psalmenlied: |  |
|  | GL421, 1+2 | Mein Hirt ist Gott, der Herr |
|  |  |
| Ruf vor dem | GL 176, 4; GL 176, 5; GL 486; GL 584, 9; GL 560, 1; |
| Evangelium: | GL 644, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Du bist Petrus der Fels -;* |
|  | *und auf diesen Felsen werde ich meine Kirche bauen,* |
|  | *und die Pforten der Unterwelt werden sie nicht überwältigen. .* |
|  |  |
| Gabenbereitung: | GL 484, 1+4+6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 786, 1+3 | Zieh an die Macht |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 208 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |
|  | GL 479, 1-3 | Eine große Stadt ersteht |